Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LI (51), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

स्व सहायता समूह द्वारा महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण एवं विकास

डॉ. जितेन्द्र कुमार कुशवाहा* जागेन्द्र कुमार कुशवाहा**

*** अतिथि विद्वान (समाजशात्र) म.गा.चि.ग्रा.वि.वि., चित्रकूट, सतना (म.प्र.) भारत**
**** शोधार्थी (हिन्दी) महराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.) भारत**

शोध सारांश – स्वसहायता समूह द्वारा महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण विषय पर अध्ययन करने पर स्वसहायता समूह से जुड़ने के बाद महिलाओं की आय में वृद्धि हुई है। छोटी-छोटी बचत करके वह गरीबी निवारण में अपनी भागीदारी निभाती हैं। स्व सहायता समूह सामाजिक, आर्थिक सशक्तिकरण की अटूट कड़ी है। समूह में सम्मिलित सदस्य छोटे उद्योगों व रोजगार कार्यों के लिए ऋण लेते हैं और इस ऋण का प्रयोग अगरबत्ती, पापड़ अचार, मुरब्बा, रेडी टू ईट आदि बनाने में करते हैं। इसके साथ ही आपसी लेन-देन भी करते हैं। इन सभी कार्यों में उनका सहयोग सरकारी व गैर-सरकारी संस्थाएं महिला बाल विकास, स्वास्थ्य विभाग करते हैं। ग्रामीण बैंक के सहयोग से भी वित्तीय सहायता प्राप्त होती है, जिससे महिलाओं में आत्मविश्वास, शांति, आत्मसम्मान व सजगता भी बढ़ी है।

प्रस्तावना – वर्तमान समय में महिलाएं विश्व की आबादी की आधी जनसंख्या का तथा एक तिहाई श्रम शक्ति का प्रतिनिधित्व करती हैं। विश्व के कुल निरक्षरों में तीन में से दो महिलाएं हैं। 50% महिलाएं खाद्य उत्पादन के कार्यों में लगी हैं। महिलाओं की स्थिति में वर्तमान समय में सुधार हुआ है। स्वयं सहायता समूह का आशय 15-20 सदस्यों का समजातीय समूह होता है, जो अपनी सामान्य समस्याओं के लिए समूह बद्ध होते हैं एवं स्वैच्छिक आधार पर बचत करते हैं और इस बचत से अपनी वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। आपसी समस्याएं सुलझाते हैं और आपसी लेनदेन के द्वारा जो ब्याज प्राप्त होता है उससे अपनी आर्थिक समस्याओं का समाधान करते हैं, क्योंकि गरीबी निवारण एक व्यक्ति का नहीं बल्कि सामूहिक प्रयास है।

महिला स्वयं सहायता समूह द्वारा महिलाओं को एक मजबूत मंच मिला है। महिलाओं में जागरूकता आई है वह अपने अधिकारों के प्रति सजग हो गई हैं और प्रत्येक क्षेत्र में सहभागी हो रही हैं कई गाँव में महिलाएं सरपंच एवं पार्षद हैं। देश में महिलाएं सांसद, विधायक, मेयर के पद में भी हैं। महिलाओं के आत्म-विश्वास में वृद्धि हुई है। अपने गाँव की छोटी-छोटी समस्याओं को स्वयं ही सुलझा लेती हैं। स्वामी विवेकानंद जी ने कहा है कि- 'नारी यदि दृढ़ता का कवच और ले तो संसार की कोई ताकत उसे हरा नहीं सकती।'

आज की महिलाओं ने जिन उपलब्धियां को स्पर्श किया है उसके लिए महात्मा गांधी ने कहा है कि-'एक लड़की की शिक्षा लड़के की शिक्षा की अपेक्षा महत्वपूर्ण है क्योंकि लड़के को शिक्षित करने पर वह अकेला शिक्षित होता है, परंतु लड़की शिक्षित होने पर पूरा परिवार शिक्षित हो जाता है।' इच्छा एक ऐसा कारगर हथियार है जो सामाजिक विकास को गति देता है।

आंन्ध्रप्रदेश के 33 कस्बों के 150 उत्तरदाताओं से मिली जानकारी के द्वारा मौलिक व सहायक तथ्यों से यह निकला है कि सशक्तिकरण की प्रत्येक जगह जैसे- शिक्षा, रोजगार और आजादी में जागरूक और उत्पादों के निर्माण कौशल से जुड़ी महिलाओं ने उन महिलाओं से अच्छा प्रदर्शन किया है जो जागरूक और उत्पादन कौशल योजनाओं से जुड़ ही नहीं पाई हैं (नरसिम्हा एस. 1997)

उद्देश्य:

1. स्वसहायता समूह का परिचय व गतिविधियों की जाँच करना।
2. स्वसहायता समूह द्वारा महिलाओं में जागरूकता के संबंध में जानकारी प्राप्त करना।
3. स्वसहायता समूह के माध्यम से आर्थिक सशक्तिकरण को ज्ञात करना।

अध्ययन पद्धति- स्वसहायता समूह द्वारा महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण प्राथमिक स्रोत पर आधारित है जो कि अनुसूची प्रणाली की मदद से किये गये साक्षात्कार द्वारा प्राप्त हैं। जिसमें की समूह के सदस्यों की साधारण जानकारी, आय, बचत समूह सदस्यता व लोन संबंधी प्रश्न हैं।

हमने सतना जिले के 5 स्वसहायता समूह के 60 सदस्यों का यादृच्छिक नमूना तकनीकी के आधार पर चयन किया है। जो गाँव हमने चुने हैं वो रेऊसा, चन्द्रकुइया, अमकुई, जसो, दुरेहा आदि। इन गाँवों में स्वसहायता समूह सफलतापूर्वक कार्यरत है। आकड़ों के संकलन हेतु अनुसूवी का प्रयोग किया गया है और आंकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत, औसत के माध्यम से किया गया है?

तालिका क्रमांक-1: स्व सहायता समूह के कार्य एवं सदस्य

क्र.	समूह का नाम	समूह सदस्य संख्या	समूह के कार्य	उत्तरदाता
1	सरस्वती समूह	11	पापड़, अचार	12
2	कृष्णा समूह	32	डेयरी	12
3	ओम साई-2	20	मध्यान्ह भोजन	12
4	जाग्रति स्वयं सहायता समूह	15	सब्जी विक्रय	12
5	दुर्गा समूह	12	मिर्च, मसाला, अचार	12
	कुल			**60**

प्राथमिक स्रोत पर आधारित कुल स्वसहायता समूह सदस्यों में 60

सदस्यों को निदर्शन के रूप में चुना गया है और उनका चुनाव उनके कार्य के आधार पर किया गया है हर समूह से 12 सदस्यों का चुनाव किया गया है।

आयु स्वसहायता समूह सहायता के लिए एक महत्वपूर्ण मुद्दा है, सामाजिक आर्थिक गतिविधियों के लिए जरूरी है। युवा और कम उम्र के लोग सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक गतिविधियों में अधिक हिस्सा लेते हैं।

तालिका क्रमांक–2: स्वसहायता समूह के सदस्यों की आयु समूह

क्र.	समूह का नाम	उत्तरदाताओं की सीमा	प्रतिशत
1	20 से कम आयु के लोग	6	10
2	21–30 आयु	30	30
3	31–40 आयु	15	25
4	41– 50 आयु	3	5
5	51 से अधिक	6	10
	कुल	**60**	

प्राथमिक स्रोत पर आधारित– 20 से कम आयु के लोग 10 प्रतिशत एवं 21–30 वर्ष के लोग 30 प्रतिशत और 31 से 40 वर्ष वाले 25 प्रतिशत, 41 से 50 वर्ष वाले 5 प्रतिशत, 51 वर्ष से अधिक के 10 प्रतिशत हैं। और ये स्थानीय समस्याओं का समाधान ज्यादा करते हैं।

तालिका क्रमांक–3: स्वसहायता समूह से जुड़ने से पहले व बाद में सदस्यों की मासिक आय

क्र.	मासिक आय	समूह सदस्यता से पहले		समूह सदस्यता के बाद	
		उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	बेरोजगार	24	40	2	3.33
2	500 से कम	10	16.67	25	41.67
3	501 से 1000	12	20	5	8.33
4	1001 से 1500	5	8.33	20	33.33
5	1501 से 2000	6	10	3	5
6	2000 से अधिक	3	5	5	8.33
	कुल	**60**	**100**	**60**	**100**

प्राथमिक स्रोत पर आधारित– उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि समूह में जुड़ने से पहले सदस्यों की आय क्या थी और समूह सदस्यता के बाद आय में बढ़ोत्तरी किस प्रकार हुई। समूह में जुड़ने से पहले बेरोजगारी का प्रतिशत 40 % था जो सदस्यता के बाद 3.33 प्रतिशत हो गया। इस प्रकार मासिक आय में समूह में सदस्यता से पहले और सदस्यता के बाद परिवर्तन दिखाई पड़ता है।

निष्कर्ष एवं सुझाव– महिलाओं की गरिमा व अस्तित्व को बनाए रखना आज सबसे बड़ी चुनौती है। सरकार द्वारा चलाई जा रही आर्थिक कल्याणकारी योजनाएं जो समय–समय पर महिलाओं को सहायता प्रदान करती हैं लेकिन इसके बाद भी महिलाएं शोषण का शिकार, गरीब और पीड़ित हैं। इसलिए आशावान परिणाम प्राप्त नहीं हो रहे हैं। राज्य और केन्द्र सरकार से आग्रह है कि महिला विकास कार्यक्रम में तेजी लाए और पर्याप्त बजट की व्यवस्था करें।

1. उत्तरदाताओं का मानना है कि स्वसहायता समूह के बैंक लिकेज से वह स्वयं आत्मनिर्भर हुए है और परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार आया है।
2. समूह में आर्थिक सशक्तिकरण से स्वास्थ्य, शिक्षा और पोषण में सुधार हुआ हैं।
3. महिलाएं अपनी समस्याओं को सुलझाने में सक्षम हुई है।
4. स्वसहायता समूह से शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ रही है।

सुझाव:

1. जो स्वसहायता समूह ठीक कार्य करें और उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए।
2. सरकारी योजनाओं को स्वसहायता समूह को अवगत कराना चाहिए।
3. बैंक की लोन प्रक्रिया सरल होनी चाहिए।
4. महिलाओं के विकास हेतु जागरूकता कार्यक्रम होने चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:–

1. ठाकुर, डॉ. हंसराज, महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण,दशाएँ एवं दिशा, 2013
2. कुजुर, डॉ. ज्योति, छत्तीसगढ़ राज्य के स्वसहायता समूह का आर्थिक विशेषण सरगुजा जिले के विशेष सदर्भ में।
3. योजना– अंक अप्रैल 2012

****